UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
NET BUREAU

Code No. : 91

Subject : PRAKRIT

पाठ्य-विवरण तथा नमूने के प्रश्न

निर्देश :

इस विषय के अन्तर्गत दो प्रश्न-पत्र होंगे। प्रश्न-पत्र—II में कुल 50 विकल्पी प्रश्न (बहु-विकल्पी, सुमेलित टाइप, सत्य/असत्य, कथन-कारण टाइप) होंगे जिनके कुल अंक 100 होंगे और प्रश्न-पत्र—III के दो भाग—A और B होंगे। भाग–A में 300 शब्दों के 10 संक्षिप्त निबन्धात्मक प्रश्न होंगे जिनमें से प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का होगा। प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न होगा इनमें से प्रत्येक प्रश्न के साथ तत्सम्बन्धी इकाई से एक आन्तरिक विकल्प का प्रश्न होगा। कुल अंक 160 होंगे। भाग–B अनिवार्य होगा और जिसमें इकाई–I से इकाई–X में से प्रश्न पूछे जाएंगे। परीक्षार्थी को भाग–B से 800 शब्दों का एक प्रश्न का उत्तर देना होगा जिसका पूर्णांक 40 होगा। प्रश्न-पत्र—III के कुल 200 अंक होंगे।

अन्यथा निर्देश नहीं होने पर उत्तरों का माध्यम हिन्दी **अथवा** अंग्रेजी होगा।

PAPER—II और PAPER—III (भाग-A और B)

इकाई—I : प्राकृत भाषा का इतिहास : उत्पत्ति एवं विकास

वैदिक (छान्दस) साहित्य में प्राकृत भाषा के तत्त्व

प्राकृत भाषा का विकास

- प्रथमयुगीन प्राकृत
- मध्ययुगीन प्राकृत
- तृतीययुगीन प्राकृत-अपभ्रंश

आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में प्राकृतों का योगदान

इकाई—II : विभिन्न प्राकृतों की विशेषताएँ

- मागधी
- अर्धमागधी
- शौरसेनी
- महाराष्ट्री
- पैशाची
- अपभ्रंश

इकाई—III : अर्धमागधी एवं शौरसेनी आगम साहित्य का इतिहास

इकाई—IV : प्राकृत काव्य साहित्य का इतिहास

महाकाव्य
चरितकाव्य
खण्डकाव्य
चम्पू
कथासाहित्य

इकाई—V : नाटक एवं सट्टक साहित्य का इतिहास

इकाई—VI : प्राकृत शिलालेखीय साहित्य का इतिहास

(सम्राट अशोक के 14 गिरनार शिलालेख एवं सम्राट खारवेल के हाथीगुंफा शिलालेख का विस्तृत अध्ययन)

इकाई—VII : प्राकृत लाक्षणिक साहित्य का इतिहास

अलंकार
वृत्त (छन्द)
कोश

इकाई—VIII : प्राकृत व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

(कारक, संधि, क्रिया, तद्धित, कृदन्त, समास एवं रूपतत्त्व)
(स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग, ध्वनि-परिवर्तन-स्वर-परिवर्तन, व्यंजन-परिवर्तन एवं यश्रुति)

इकाई—IX : प्राकृत मूल ग्रन्थ अध्ययन

आचारांग (प्रथम श्रुतस्कंध : प्रथम अध्ययन—सत्थपरिण्णा
द्वितीय अध्ययन—लोगविजय)
उत्तराध्ययन (नवां अध्ययन—नमिपवज्जा
तेबीसवां अध्ययन—केशी-गौतम)
प्रवचनसार (कुन्दकुन्दाचार्य) : (प्रथम ज्ञानाधिकार)
सन्मतितर्कप्रकरण (सिद्धसेन)
द्रव्य संग्रह (नेमिचन्द्र)

इकाई—X : प्राकृत मूल ग्रन्थ अध्ययन

मृच्छकटिक (शूद्रक) केवल प्राकृत-भाग
सेतुबन्ध (प्रवरसेन) प्रथम आश्वास
कुवलयमालाकहा (उद्योतनसूरि) अनुच्छेद 1 से 12
कर्पूरमंजरी (राजशेखर)
णायकुमारचरिउ (पुष्पदंत)

PAPER—II

1. उत्तराध्ययन के तेबीसवें अध्ययन का नाम है

(A) गौतम–महावीर

(B) केशी–गौतमीय

(C) प्रदेशी–केशी

(D) नमि–देवेन्द्र

2. भगवती आराधना के रचयिता है

(A) धनपाल

(B) मार्कण्डेय

(C) कुन्दकुन्दाचार्य

(D) शिवार्य

3. ये कथन सत्य हैं

(i) प्राकृत में धातु स्वरान्त होती है।

(ii) प्राकृत में ऐ और औ स्वर नहीं होते हैं।

(iii) प्राकृत में द्विवचन होता है।

(iv) प्राकृत में विसर्ग नहीं होता है।

(A) (i)

(B) (i) तथा (iii)

(C) (i), (ii) तथा (iv)

(D) सभी

PAPER—III (A)

1. प्राकृत शब्द के अर्थ का विवेचन कीजिए और प्राकृत भाषा की उत्पत्ति पर प्रकाश डालिए।

Or

मागधी और अर्धमागधी का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

PAPER—III (B)

11. सेतुबन्ध की समीक्षा कीजिए।

Or

प्राकृत में ऋ के विकारों का विवेचन कीजिए।

★★★